बीए अर्थशास्त्र- लोक वित्त (Public Finance)

Semester 04 (Paper 02)

राजस्व या लोक वित्त

संस्कृत शब्द राजस्व दो अक्षरों के मेल से बना है:- राज + स्व।
जिसका हिंदी में अर्थ होता है ***राजा का धन।*** अतः।
इस में हम राजा या राज्य सरकार के धन का अध्ययन करते हैं। इसमें हम यह अध्ययन करते हैं कि वह राजा या राज्य सरकार किस प्रकार अपनी आय संग्रहीत करती है और किस प्रकार उसे व्यय करती है।

राजस्व को लोकार्पित या सार्वजनिक वित्त या लोक अर्थशास्त्र या राज्य वित्त भी कहते हैं। जो अर्थशास्त्र का एक महत्वपूर्ण भाग है तथा कुछ सीमा तक यह अर्थशास्त्र से भी प्राचीन है।
अंग्रेजी के **पब्लिक फाइनेंस** शब्द का अर्थ होता है जनता, वित्त या सार्वजनिक वित्त।

राजस्व की परिभाषाएं

अर्थशास्त्रियों ने राजस्व की परिभाषा भिन्न भिन्न प्रकार से दिये:

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अत्यधिक विस्तृत परिभाषाएं

डॉ. डॉल्टन के अनुसार, "राजस्व उन सेवाओं में से एक है जो अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र के बीच की सीमा पर स्थित है। इसका संबंध लोक संस्थाओं की आय व्यय तथा उनके पारस्परिक समायोजन से है"।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*

विस्तृत परिभाषाएं

लूट के अनुसार "राजस्व उन साधनों की व्यवस्था, सुरक्षा तथा वितरण का अध्ययन करता है जो सार्वजनिक अथवा सरकारी कार्यों को चलाने के लिए आवश्यक होते हैं"।

स्मिथ के अनुसार, "राजकीय आय और राजकीय व्यय की प्रकृति एवं सिद्धांतों की खोज को राजस्व कहते हैं"।

संकुचित परिभाषा

मेहता एवं अग्रवाल के अनुसार, "राजस्व आय के मौद्रिक तथा साख संबंधी साधनों का अध्ययन है"।

अर्थव्यवस्था में सरकारी भूमिका के महत्त्व के अनुसार

रिचर्ड मसग्रेव के अनुसार, "राजस्व सार्वजनिक अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों का अनुसंधान है या अधिक स्पष्ट रूप से आर्थिक नीतिका उन पहलुओं का अध्ययन है जो सार्वजनिक बजट की क्रियाओं के फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं"।

इन सभी परिभाषाओं के अनुसार,

राजस्व अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो विभिन्न सरकारों के वित्त व्यवस्था से संबंधित कार्यों, सिद्धांतो, समस्याओं, नीतियों और प्रक्रियाओं का अध्ययन तो करते ही हैं, साथ ही यह उन आर्थिक पहलुओं का भी अध्ययन करते हैं जो कि आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बजट नीतियाँ लागू करने से उत्पन्न आर्थिक प्रभावों से संबंध रखते हैं।

राजस्व का महत्त्व

- राजकीय कार्यों में वृद्धि
- आर्थिक विकास में तीव्र गति
- पूंजी निर्माण दर में वृद्धि
- समाजवादी समाज की स्थापना
- धन के वितरण में समानता
- संपत्ति के स्वामित्व में परिवर्तन
- रोजगार में वृद्धि
- कीमतों में स्थिरता लाना
- साधनों के वितरण पर नियंत्रण
- व्यापार चक्रों से मुक्ति
- आर्थिक स्थिरीकरण
- क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहन

राजस्व के कार्य

प्राचीन राजस्वशास्त्रियों के अनुसार, राजस्व का संबंध लोकसत्ताओ के आय व्यय तथा उन पद्धतियों से है जिससे आय का व्यय समायोजित किया जाता है। परन्तु वर्तमान समय में राज्य के कार्यों में वृद्धि हो जाने से राज्य के वित्तीय कार्य आप केवल आय व्यय संबंधी समस्याओं तक ही सीमित नहीं रह गए हैं। अपितु यह समस्या साधन आवंटन आय और संपत्ति के वितरण में समायोजन मूल्य स्थिरता, पूर्ण रोजगार, आर्थिक विकास और भुगतान संतुलन से संबंधित भी है।

राजस्व या बजट पद्धति के कार्यों को तीन भागों में बांटा गया है:-

आवंटन कार्य: आवंटन कार्य सामाजिक वस्तुओं की व्यवस्था से संबंधित होता है।

वितरण कार्य: आय तथा संपत्ति के वितरण में इस प्रकार का समायोजन की समाज की दृष्टि में व उचित तथा न्यायपूर्ण वितरण कार्य कहलाता है।

<u>स्थिरीकरण कार्य:</u> बजट नीती की स्थिरीकरण शाखा का प्रमुख उद्देश्य उच्च रोजगार स्थापित करना। कीमत स्तर में उचित मात्रा में स्थायित्व लाना तथा आर्थिक विकास की उचित दर को प्राप्त करना होता है।

लोक वित्त या राजस्व के क्षेत्र
(Scope of Public Finance)

राजस्व या लोक वित्त के क्षेत्र का अध्ययन निम्नलिखित चार शीर्षकों के अंतर्गत किया जाता है-

1.राज्य के कार्य

2.आर्थिक जीवन पर राजकोषीय क्रियाओं का प्रभाव

3.राजस्व की विषय सामग्री

4.राजस्व की प्रकृति

राज्य के कार्य (Functions of State)

प्राचीन अर्थशास्त्री अर्थव्यवस्था में सरकार के कार्यों की संख्या कम से कम रखने के पक्ष में थे। सन 1776 में एडम स्मिथ ने ***वेल्थ ऑफ नेशन्स*** नामक अपनी पुस्तक में राज्य के कार्यों के संबंध में सर्वप्रथम एक लेख लिखा।

एडम स्मिथ के अनुसार राज्य के कार्यों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है-

- अन्य राष्ट्रों के आक्रमण तथा अन्याय के विरुद्ध राष्ट्र की सुरक्षा प्रदान करना।
- नागरिको के बीच आंतरिक शांति, न्याय तथा व्यवस्था बनाए रखना।
- कुछ ऐसे सार्वजनिक कार्यों एवं सार्वजनिक संस्थानों की स्थापना करना एवं उनका संचालन करना जो समाज के लिए लाभदायक हो।

आधुनिक समय में अर्थव्यवस्था में राज्य के कार्य में परिवर्तन आया है। इस प्रकार आधुनिक राज्य के कार्यों का विश्लेषण हम इस प्रकार से कर सकते है-

- आंतरिक व वाह्य सुरक्षा तथा सैनिक पुलिस तथा अन्य सुरक्षात्मक सेवाओं के लिए व्यय की व्यवस्था करना।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

• न्याय अथवा विवादों का निपटारा।

• आर्थिक उद्यमों तथा अन्य ऐसी सेवाओं का नियमन व नियंत्रण जैसे कि सिक्का, ढलाई माप, व्यावसायिक गतिविधियों का नियमन। आदि।

• शिक्षा, सामाजिक सहायता, सामाजिक बीमा, स्वास्थ्य नियंत्रण तथा ऐसे ही अन्य क्रिया के द्वारा सामाजिक तथा सांस्कृतिक कल्याण वृद्धि करना।

• औषधियों का निर्माण व बिक्री, मध्य की बिक्री, जुआ तथा अन्य समाज विरोधी कार्यवाहियों पर नियंत्रण लगाकर नैतिक स्तरों का नियमन करना।

• प्राकृतिक साधनों का संरक्षण।

• परिवहन तथा संचार के साधनों पर नियंत्रण रखकर तथा ऐसे ही अन्य उपायों द्वारा राज्य की एकता को न केवल बनाए रखना, अपितु उनमें और वृद्धि कान।

• सरकार का प्रशासन तथा सरकारी अधिकारियों की सहायता।

• सरकार की वित्तीय व्यवस्था और राजकोषीय नियंत्रण का प्रशासन।

• समय समय पर धर्म से संबंधित कार्य।

राजकोषीय क्रियाओं के प्रभाव (Effects ऑफ़ Fiscal Operations)

एक देश की राजकोषीय नीति हिसाब देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डाल सकती है।

एक ओर तो यह सरकारी आय की मात्रा में वृद्धि करके ऐसा कर सकती है। दूसरी ओर सरकारी खर्च की मात्रा तथा उसकी दिशा परिवर्तन करके तीन महत्वपूर्ण राजकोषीय उपाय, जिनके द्वारा सरकारी खजाने या राजकोष के साधनों में वृद्धि की जा सकती है।

यह है-

1.काराधान या करारोपण,

2.जनता के उधार तथा

3.ऋण प्राप्ति या साख निर्माण।

इन तीनों में कराधान सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। और कराधान का उपयोग निम्न लक्ष्यों की प्राप्ति के किया जाता है।

- उपभोग पर रोक लगाकर यह उन्हें कटौती करके उत्पत्ति के साधनों का उपभोग के निवेश की ओर स्थानांतरित करना।
- बचत तथा निवेश करने के लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन देना।
- साधनों को जनता के हाथों में से राज्य के हाथों में देना जिससे सार्वजनिक निवेश करना संभव हो सकता है।
- आर्थिक असमानता में कमी करना।

राजस्व की विषय सामग्री/विभाग (Subject- Matter of Public Finance)

राजस्व के संपूर्ण क्षेत्र के अंतर्गत निम्नलिखित विषयों का अध्ययन किया जाता है-

सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure)

इसके अंतर्गत सरकार के द्वारा देश के विकास कार्यों के लिये किये गए व्ययों का अध्ययन किया जाता है।

जैसे शिक्षा, चिकित्सा, सड़कों का निर्माण करना आदि सामाजिक कार्य

सार्वजनिक आय (Public Revenue)

इस विभाग के अंतर्गत सरकारी व्यय के लिये राशि प्राप्त करने के साधनों पर नालियों एवं सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है। सार्वजनिक आय प्राप्त करने के कई साधन हो सकते हैं।

जैसे कर प्राप्तियां, गैर-कर प्राप्तियां आदि।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

सार्वजनिक ऋण (Public Debts)

जब किसी समय राज्य का व्यय आमदनी से अधिक होने पर सरकार जनता से ऋण लेकर इस व्यय को पूरा करती है तो इस ऋण को अर्थशास्त्र में सार्वजनिक ऋण कहा जाता है।

यह सार्वजनिक आय का ही एक साधन होता है।

वित्तीय प्रशासन (Financial Administration)

राजस्व के इस विभाग के अंतर्गत राज्य के वित्तीय कार्यों का संचालन तथा प्रशासन से संबंधित कार्यों का अध्ययन किया जाता है। राजस्व के संबंध में जो शासकीय व्यवस्था बनायीं जाती है, उसकी विस्तृत जांच की जाती है।

संघीय वित्त (Financial Finance)

राजस्व के एक विभाग के रूप में आजकल संघीय विश्व का महत्त्व बढ़ गया है। विश्व के अनेक प्रमुख देशों में संघीय शासन व्यवस्था विद्यमान है। इसमें केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय विभाजन होता है।

आर्थिक संतुलन (Economic Stabilisation)

देश में आर्थिक स्थायित्व एवं संतुलन स्थापित करने के उद्देश्य से राजकोषीय नीति को सरकार द्वारा लागू किया जाता है। जिसके अन्तर्गत सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र। को नियंत्रित किया जाता है और सार्वजनिक कल्याण की प्राप्ति पर बल दिया जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

आर्थिक विकास (Economic Development)

आज विकसित देशों की समस्या आर्थिक विकास की तीव्र एवं निर्बाध गति से करने की है। अत: यह स्वीकार कर लिया गया है कि उनके आर्थिक विकास में राजकोषीय नीति को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

राजस्व की प्रकृति (Nature of Public Finance)

इसके अंतर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि राजस्व अर्थशास्त्र का एक अंग है और अर्थशास्त्र, विज्ञान तथा कला दोनों है, तो राजस्व भी विज्ञान और कला दोनों हो सकता है।

राजस्व एक विज्ञान है।

विज्ञान नियमों या सिद्धांतों के समूहों होता है। जो कारण और परिणाम के संबंध पर आधारित होता है।

अतः, राजस्व भी एक विज्ञान है क्योंकि राजस्व में सरकार की वित्तीय क्रियाओं एवं उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है तथा उनके क्रियाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिए करों, व्ययों और ऋण नीतियों के बारे में विभिन्न नियमों और सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया।

राजस्व एक कला है।

कला एक दिए हुए उद्देश्य की प्राप्ति के लिये नियमों की एक प्रणाली है।

अर्थात किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपनाए गए विधि यह प्रक्रिया को कला कहा जाता है। इस दृष्टि से राजस्व भी एक कला है। जिसके द्वारा सरकार बजट द्वारा बजट बनाने के विभिन्न क्रियाओं के बारे में अध्ययन किया जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

राजस्व नीति के उद्देश्य एवं भूमिका
(Role/ Aims of Public Finance Policy)

उत्पादन, रोजगार, कीमत के निर्धारण में राजस्व की भूमिका या उद्देश्य

श्रीमती उर्सला हिक्स के शब्दों में, "इस कथन में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि किसी राष्ट्र का चिर कल्याण जितना उसकी एक कारीगरों की प्रवीणता व श्रमशीलता और उसके सैनिकों पर निर्भर करता है, उतना ही उसके सार्वजनिक वित्त संबंधी प्रश्नों की सफल समाधान पर भी निर्भर करता है"।

राजस्व या लोक वित्त नीति (Public Finance Policy):

लोक वित्त नीति से अभिप्राय एक ऐसी नीति से है, जिसके द्वारा सरकार किसी विशेष देश जैसे कीमतों में स्थायित्व लाना, आर्थिक विकास एवं पूर्ण रोजगार लक्ष्य को प्राप्त करना, कर संरचना, लोक व्यय तथा लोक ऋण का निर्धारण करती है।

श्रीमती उर्सुला हिक्स के शब्दों में,

"राजकोषीय नीति का सम्बन्ध इस पद्धति से है, जिसमें लोक वित्त के विभिन्न अंग अपने प्राथमिक कर्तव्यों को पूरा करते हुए (जैसे कर का प्रथम कर्तव्य धन को चुराना है) सामूहिक रूप से आर्थिक नीति के उद्देश्यों को बढ़ाने के लिए प्रयोग में लाए जाते है"।

संक्षेप में,

राजकोषीय नीति का आशय सरकार के व्यय, करों तथा ऋण संबंधी क्रियाओं से है तथा इसका संबंध सरकारी कर तथा व्यय रीति के निर्धारण से है।

इसे लोक वित्त नीति भी कहते हैं।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में राजस्व का महत्त्व
(ROLE OF PUBLIC FINANCE IN NATIONAL ECONOMY)

भारत के प्रथम वित्त मंत्री ***जेम्स विल्सन*** ने कहा था,
"राजस्व केवल अंकगणित ही नहीं, वरन एक महान नीति है। सुदृढ़ राजस्व के बिना सुदृढ़ शासन संभव नहीं और सुदृढ़ शासन के बिना राजस्व असंभव है"।

फ्रेंडली सिराज ने राजस्व के महत्त्व के बारे में लिखा है, "राज्य का राजस्व ही राज्य है और प्रत्येक उपक्रम का श्रीगणेश वित्तीय कोष पर आधारित होता है"।

प्रो. लर्नर ने कहा है, "सरकार की वित्तीय नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक जीवन के ढांचे में परिवर्तन करना होता है और इसी कारण राजस्व का अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है"।

प्रो. डाल्टन ने कहा है कि, "राजस्व सरकार द्वारा समाज का महत्तम सुख-सुविधा का शास्त्र है"।

प्राचीन काल में की तुलना में 19वीं शताब्दी की अंत से राजस्व का महत्त्व दिन प्रतिदिन बढ़ता गया है।

इसके दो प्रमुख का कारण है-

- प्रथम, समाजवादी प्रवृतियों के प्रभाव के कारण राज्य के कार्यों में निरंतर वृद्धि हुई।
- दूसरा, आर्थिक जीवन पर राजकोषीय नीतियों का प्रभाव हुआ।

राजकीय कार्यों में वृद्धि

प्राचीन काल में एक राज्य से केवल देश की सुरक्षा और देश में शांति की आशा की जाती। परंतु आधुनिक समय में कल्याणकारी राज्य की भावना के उदय से समाज के एक राज्य से बहुत से ऐसे कर्तव्यों की आशा करता है जिनका विचार एक पूर्णकालिक नागरिक कभी करता भी नहीं था।

अब राज्य को अनेक कल्याणकारी कार्य करने पड़ते है-

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

जैसे *राज्य के किसानों, श्रमिकों, विस्थापितो, स्त्रियों, बच्चों, पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जनजातियों तथा अनुसूचित जातियों व बूढ़ों रोगियों, आसहाय, अनाथ को किशोर अपराधियों* आदि सभी के लिए कल्याण के काम करने पड़ते हैं। श्रमिकों के वेतन, शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल, बच्चों की देखभाल आदि की व्यवस्था करनी पड़ती है।

राष्ट्रीय योजना समिति ने देश के क्रमबद्ध एवं आयोजित विकास के कार्यक्रम में राजस्व के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए लिखा था- "राजस्व शब्द का उपयोग सरकार द्वारा अर्जित आय जिसके अन्तर्गत सरकारी कोष शामिल हो, के लिए ही नहीं बल्कि जनता के कल्याण के लिए आकस्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तथा आर्थिक संपत्ति उत्पादन करने के लिये समाज सामूहिक साक्ष्य के लिए होना चाहिए। जिसने समाज के प्रत्येक अंग का जीवन-स्तर कुछ उच्च हो सके"।

राज्य के कार्यों में अत्यधिक वृद्धि होने के फलस्वरूप उनके खर्चों में वृद्धि होना स्वाभाविक है ।

अतः एक समाजवादी राज्य में राजस्व का अत्यधिक महत्त्व होता।

आर्थिक जीवन पर राजकोषीय नीतियों का प्रभाव

राजस्व का महत्त्व इस कारण भी अधिक है क्योंकि सरकार की वित्तीय कार्यों का प्रभाव मौद्रिक आय की प्राप्ति व उसके व्यय एवं उत्पत्ति के रूप तथा राष्ट्रीय आय के विभिन्न मदों में होने वाले वितरण पर ही नहीं पड़ता, बल्कि उससे उत्पत्ति व रोजगार के स्तर भी बड़े अंश तक प्रभावित होते है। किसी भी देश के आर्थिक साधनों का उपयोग किस प्रकार किया जाता है यह बहुत कुछ सरकार की राजकोषीय नीति पर निर्भर होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आर्थिक जीवन पर राजकोषीय नीतियों का गहरा प्रभाव पड़ा।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

ए पी लर्नर ने लिखा, "सरकार की वित्तीय नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक जीवन के ढांचे में आवश्यकता और इच्छा के अनुसार परिवर्तन करना होता है। राजस्व द्वारा अर्थव्यवस्था में क्रियात्मक हेरफेर किए जा सकते हैं और इसी कारण राजस्व का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है"।

करारोपण नीति व सार्वजनिक व्यय से देश की आवश्यकता के अनुरूप औद्योगिक ढांचे का निर्माण किया जा सकता है तथा देश में प्रचलित बुराइयों को दूर किया जा सकता है।

करारोपण तथा सरकारी खर्च की व्यवस्था में इस प्रकार परिवर्तन किया जा सकता है कि जिससे उत्पादन को प्रोत्साहन मिले। अथवा उन नियमों के अनुसार उत्पादन का निर्देशन किया जा सके, जिन्हें सरकार आवश्यक समझती हो अथवा अनावश्यक उद्योगों को समाप्त किया जा सकता है।

सरकार की राजस्व नीति राष्ट्रीय धन को संतुलित एवं यथार्थ वितरण करने में काफी सहायता देती है। ऊंचे-नीचे कर सामाजिक विषमता को दूर करने के उपाय माने जाने लगे हैं। *हमारे देश में धनकर, व्यय कर, संपदा कर, भेंट कर, आयकर तथा अधिक-कर लगाए जाते हैं।*

इन सभी करों के भिन्न भिन्न उद्देश्य संक्षेप में राजकोषीय नीति की देश की आर्थिक जीवन पर जो प्रभाव पड़ते हैं, वे इस प्रकार है-

- करारोपण द्वारा हानिकारक वस्तुओं के उपभोग को नियंत्रित किया जा सकता है।
- करारोपण द्वारा धन और आय के वितरण को सुधारा जा सकता है।
- कर व व्यय नीति द्वारा देश के शिशु उद्योगों को विदेशी प्रतियोगिता से संरक्षण प्रदान किया जा सकता है।
- राजकीय व्यय द्वारा नए उद्योगों और व्यवसायों का निर्माण हो सकता है, जो देश के लिए आवश्यक है।
- देश में बेकारी दूर की जा सकती है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

• वित्तीय नीतियों के द्वारा भिन्न भिन्न स्थानों के विभिन्न व्यवसाय में होने वाले वितरण को निर्धारित किया जा सकता है तथा देश का संतुलित विकास किया जा सकता है।
• अविकसित देशों का विकास किया जा सकता है।

राजस्व नीति के उद्देश्य
(Aims of Public Finance Policy)

प्रो. मसग्रेव के शब्दों में, "राजस्व नीति का उद्देश्य उच्च रोजगार कीमत, स्थायित्व का उचित स्तर, विदेशी खातों में संतुलन तथा आर्थिक विकास की दर प्राप्त करना अथवा बनाए रखना होता है"।

राजस्व नीति के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है -
• आर्थिक विकास के लिए साधन जुटाना।
• साधनों का आवंटन करना।
• उत्पादन रोजगार व कीमतों को प्रभावित करना।
• आय व संपत्ति के वितरण की असमानताओं को दूर करना।

THE ECONOMICS GURU

आर्थिक विकास के लिए साधन जुटाना
(Mobilization of Resources for Development)

विकसित एवं अल्पविकसित राष्ट्रों में राजस्व के उद्देश्य अलग अलग होते हैं।

विकसित देशों की प्रमुख समस्या ***आर्थिक स्थायित्व*** की समस्या होती है जबकि **अल्प विकसित देशों** की प्रमुख समस्या उनकी ***आर्थिक विकास*** भी होती है।

अल्प विकसित देशों में साधनों की **दुर्बलता, पूंजी निर्माण एवं विनियोग के अभाव की समस्या** पाई जाती है। इन देशों में राजस्व का कार्य, ***पूंजी निर्माण एवं पूंजी की गति को बढ़ाने*** में सहायता करना होता है अर्थात इन देशों में सरकार का मुख्य कार्य **बचत तथा निवेश को प्रोत्साहित देना** होता है।

देशों के आर्थिक विकास को राजस्व नीति द्वारा निम्न प्रकार को प्रोत्साहित किया जा सकता है-

1.पूंजी निर्माण को प्रोत्साहन

पूंजी निर्माण की दर को बढ़ाने के लिए सरकार निम्नलिखित कदम उठा सकती है-

- सरकार स्वयं सामाजिक ऊपरी पूंजी। परिवहन, बिजली, जलापूर्ति, नहरों का निर्माण आदि में धन का विनियोजन करें।
- अपने बैंकिंग व वित्तीय संस्थाओं द्वारा उधार ऋण दिलाने की व्यवस्था करें।
- देश विदेश के निजी दुनिया कथाओं के धन को भी योग करने के लिए प्रोत्साहन दे।

2.उत्पादन को प्रोत्साहन देना

अल्प विकसित देशों में सरकार का मुख्य उद्देश्य बचत को अधिकतम बनाना तथा उसे उत्पादक प्रयोग में लगाना होता है।

- कर नीतियों में हेरफेर करके सरकार बचत की मात्रा को बढ़ा सकती है।
- अतिरिक्त करों के द्वारा सरकार जनता से अधिक आय लेकर सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग में लगा सकती है।
- निजी विनियोग को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार कर अवकाश, विकास छूट, विनियोग भत्ता आदि सुविधाएं दे सकती है।

इन सब उपायों द्वारा उत्पादन को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

3.सरकार द्वारा स्वयं आर्थिक क्रियाएं करना

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अल्प विकसित देशों की सरकारे आर्थिक विकास की गति को तीव्र करने के लिए योजनाएं बनाती है। उन योजनाओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन जुटाने पड़ते है। तत्पश्चात प्राथमिकताएँ सुनिश्चित करके एक वित्तीय साधनों को विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावित करना पड़ता है। सरकार कृषि, सिंचाई, विद्युत, परिवहन व संचार उद्योग आदि में स्वयं पूंजी का भी सहयोग करती है ताकि व्यक्तिगत निवेश की कमी पूरा हो जाये।

साधनों का आवंटन करना
(Allocation of Resources)

अल्पविकसित देशों के पास पर्याप्त साधनों का अभाव रहता है अथवा उनके विकास के लिए साधनों का जुटाना ही पर्याप्त नहीं वरन साधनों का विभिन्न कार्यो अथवा प्रयोगों में प्रभावी ढंग से वितरण करना भी आवश्यक है। ताकि उनका अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सके और कोई भी साधन निष्क्रिय न पड़ा रहे।

इसके लिए सरकार निम्न तरीके अपना सकती है-

- बजट नीति द्वारा अर्थशास्त्र के आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ आधार प्रदान करके।
- करों में छूट व रियायत देकर।
- आधारभूत उद्योगों की स्थापना करके।
- हानिकारक वस्तुओं के उपभोग को हतोत्साहित करके।

उत्पादन, रोजगार व कीमतों को प्रभावित करना
(Determination of Output, Employment and Prices)

लोकवित्त देश के उत्पादन, उपलब्ध रोजगार तथा कीमतों को प्रभावित करता है। इसे निम्नलिखित तीन उपशीर्षकों के अंतर्गत समझा जा सकता है-

उत्पादन को प्रभावित करना

सरकार अपनी राजस्व नीति के माध्यम से उत्पादन को निम्न प्रकार प्रभावित कर सकती है-

- सरकार स्वयं उद्योग स्थापित कर के उत्पादन में वृद्धि कर सकती है।
- सरकार आर्थिक सहायता देकर या करों में रियायत देकर या कर-मुक्त करके उत्पादन को प्रोत्साहन दे सकती है।
- घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतियोगिता से बचाने के लिए संरक्षण कर लगा सकती है।
- निर्यातों में वृद्धि करने के लिए उद्योगों को आर्थिक सहायता दे सकती है।
- मादक वस्तुओं व विलासिता की वस्तुओं के उत्पादन को भारी कर लगाकर हतोत्साहित कर सकती है।
- एकाधिकारी प्रवृतियों पर रोक लगाकर उत्पादन बढ़ा सकती है।

रोजगार पर प्रभाव अथवा पूर्ण रोजगार के निर्धारण में सहायक पूर्ण रोजगार का अर्थ

पूर्ण रोजगार की स्थिति वहाँ स्थिति है जिसमें सभी व्यक्ति जो काम करने योग्य है और प्रचलित मजदूरी की दरों पर काम करने को तैयार है, रोजगार पा सकते हैं।

पूर्ण रोजगार से अभिप्राय यह नहीं कि समाज में काम कर रहे योग्य सभी व्यक्ति किसी न किसी कार्य में अवश्य लगे हो, क्योंकि ऐसी स्थिति को प्राप्त कर पाना संभव नहीं है।

प्रो. कीन्स के अनुसार प्रत्येक देश में 3% या 5% लोग सदैव बेकार रहते हैं, क्योंकि वहाँ ऐच्छिक बेरोजगारी पाई जाती है।

पूर्ण रोजगार की स्थिति प्राप्त करने की रीतियाँ-

- उपभोग की प्रवृत्ति को बढ़ाना।
- निवेश बढ़ाना। निवेश दो प्रकार के होते हैं- निजी निवेश तथा सरकारी निवेश।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

• विदेशी निवेश।

कीमतों को प्रभावित करना

आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं का एक प्रमुख लक्षण कीमतों में उतार चढ़ाव है। औद्योगिक देशों में तेजी व मंदी के चलते चलते रहते है।

इन देशों में तेजी के बाद मंदी और मंदी के बाद तेजी का दौर चलता है।

तेजी के काल में **कीमतें बढ़ जाती है और रोजगार की मात्रा बढ़ जाती है।** उत्पत्ति तथा मांग बढ़ जाती हो और अर्थव्यवस्था का तेजी से विस्तार होने लगता है। इसके विपरीत मंदी के काल में **कीमतें गिर जाती है। उत्पादन मांग और रोजगार का स्तर भी गिरने**
लगता है।

तेजी काल के प्रभावों को रोकने के उपाय

• सरकार सार्वजनिक व्यय को कम करें।

• पुराने करों को बढ़ाकर तथा नए कर लगा कर सरकार जनता से अतिरिक्त क्रय शक्ति वापस ले लें।

• भारी मात्रा में सार्वजनिक ऋण लेकर।

• सरकार बचत का बजट बनाएं।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

मंदी काल के प्रभावों को रोकने के उपाय

• मंदी ताल में करों में छूट देनी चाहिए।

• सार्वजनिक बायो में वृद्धि होनी चाहिए।

• सार्वजनिक निर्माण कार्यों में व्यय करनी चाहिए।

• घाटे के बजट को बनाना चाहिए।

आय व संपत्ति के वितरण की असमानताओं को कम करना (Minimising the Inequalities in the Distribution of Income and Wealth)

आर्थिक, विकसित देशों में न केवल आय स्तर नीचा होता है। वरन **आय के वितरण में भी बहुत असमानता** पाई जाती। यह असमानता आर्थिक विकास के साथ साथ बढ़ती जाती है। एक ओर **धनी वर्ग** का **रहन सहन का स्तर ऊंचा** होता है, वहीं दूसरी ओर **निर्धन वर्ग** को **भरपेट भोजन भी उपलब्ध नहीं** होता।

राजस्व आय की इस असमानता को दूर करने के लिए सरकार की बड़ी सहायता करता है।

इसके लिए राजस्व नीति के द्वारा ***अधिक आय वाले लोगों पर अधिक कर*** लगाया जा सकता है।

जबकि ***गरीब समुदाय या गरीब लोगों के ऊपर शून्य कर या निम्नतम कर*** लगाया जाता है, ताकि उनकी वास्तविक आय तथा उपभोग को बढ़ाया जा सके।

साधनों का उचित वितरण (Rational Allocation of Resources)

देश के प्रकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का प्रयोग देश के आर्थिक विकास के लिए किया जाता है। उपलब्ध साधनों के पूर्ण तथा उचित प्रयोग के लिए लोक वित्त की क्रियाएं महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

निवेश के प्रवाह को वांछनीय दिशाओं में निम्न प्रकार जोड़ा जा सकता है-

- अर्थव्यवस्था की आधारभूत ढांचे को मजबूत बनाने में।
- अल्प विकसित देशों में औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन देने में।
- सार्वजनिक क्षेत्र में आधारभूत उद्योगों की स्थापना करने।
- धनी वर्गों से प्राप्त कर आय को सामाजिक कल्याण कार्यों पर व्यय करके।
- विलासिता व मादक वस्तुओं पर भारी कर लगा कर।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*